

रस जो आधार साईं रस जो आ प्राणु।  
रस जो सरूपु साईं रस सुलतानु॥

रसमय रहिणी आ कहिणी रस रूप।  
नख शिख रसमयी महिमा अनूप॥  
रस निधि राणा तवहां जो कयां गुण गानु॥

नीरसु जगत खे जो सरस बणायो आ।  
रस निधि राघव जो सुजसु सुणायो आ॥  
कथा सत्संग तवहां जो घारिणा ध्यानु॥

क्रोड़ कल्प सत्संग जी मधुर प्यास।  
अठई पहर ईश गुर अगियां अरिदास॥  
जानिब जे याद में तूं सदाई जुवानु॥

साजन सम्भार जो आ अथाहु आनन्दु।  
सुखनि सागर विहरे साईं सुख कन्दु॥

तत् सुख नेह जो तूं नेही निष्ठावानु॥

जिते किथे जेदाहं तेदाहं, दिंसीं सियाराम।  
सेवा सावधान रहीं अबल आठों याम॥  
मारुति नन्दन वांगियां माणीं विज्ञानु॥

षोडस कला सां पूर्ण मैगसि महाराज।  
दिव्य प्रकाश तवहां जो सन्त सिरताज॥  
भक्त जे रूप में तूं आहीं भगवानु॥

आदर्श अनुरागु तुहिंजो साईं सुखराशि।  
सत्गुरु साहिब चवे सहसे शाबाशि॥  
श्री मैथिलिचन्द्र मालिकजी माणीं मुस्कान॥